॥ ओ३म् ॥

उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

भगवान् दयानन्द का दिव्य

-: सन्देश :-

भावी सन्तति को आर्य बनाईये !

सोहनलाल शारदा स्वाध्याय मण्डल

शाहपुरा, जिला भीलवाड़ा (राजस्थान)

स्वर्गीय महारानी साहिबा श्रीमती हर्षवन्त कुमारी जी शाहपुरा की पुण्य स्मृति में चतुर्त पुण्य ॥

॥ ओ३म् ॥

उठो एवं जागो !

भगवान् दयानन्द ने संस्कार-विधि में वर्णन किया है कि—"सदा स्त्री पुरुष दस बजे शयन और प्रातः चार बजे उठ प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके (प्रातरग्नि०) आदि पांच मन्त्रों से प्रार्थना करके शौच-स्नानादि क्रिया से निवृत होकर संध्या यज्ञोपासनादि नित्यकर्म यथाविधि उचित समय में करें।" इस प्रकार वर्तने से बुद्धि पवित्र होती है और बुद्धि के पवित्र होने से महा कठिन कार्य भी सुगमता पूर्वक सिद्ध होते हैं। स्वयं भगवान् दयानन्द जब ५ वर्ष के थे, तब विद्यारम्भ संस्कारोपरांत, ८ वर्ष की अवस्था तक पारिवारिक कर्मकाण्ड में आने योग्य मन्त्र, स्तोत्र रुद्राध्यायी कण्ठस्थ कर यज्ञोपवीत संस्कार पश्चात् विधिवत् गायत्री-जाप करते हुये दो वर्ष में यजुर्वेद कण्ठस्थ कर पिताजी के आदेशानुसार शिवपुराण, शिव-महात्म्य को जान कर महाशिवरात्रि-पर्व पर चवदह वर्ष की आयु का महाव्रत धारण कर पूजा-पाठ में लग गये।

लेकिन वहां चूहे के उत्पात को देखकर पिताजी से प्रश्न किया कि "क्या यह सच्चा शिव है ?" प्रत्युत्तर में पिताजी ने कहा कि—"यह महान् शिव की प्रति-कृति मात्र है।" तब मन में संकल्प किया कि मैं सच्चे शिव की ही आराधना करूंगा। इसके पश्चात् जब पितामह, भगिनी एवं चाचा की मृत्यु को साक्षात् देखा तो मन में यह प्रश्न भी उत्पन्न हुआ कि यह जीवात्मा मर कर अन्त में कहां जाता है ? क्या मृत्यु से

बचने का कोई उपाय है ? इन्हीं दोनों प्रश्नों का समाधान गुरुओं से चाहने पर भी किसी ने ठीक सामाधन नहीं किया। फलस्वरूप २१ वर्ष की अवस्था में घर से अंधेरी रात्रि में नंगे पांव निकल गये और इन्हीं प्रश्नों के समाधान हेतु सम्पूर्ण भारत छान डाला। लेकिन इन प्रश्नों का समाधान कहीं पर भी प्राप्त नहीं हो सका। अन्त में समाधान मिला मथुरा में, गुरुवर दण्डी विरजानन्द के चरणों में। निरन्तर २॥ वर्ष पर्यन्त आर्य ग्रन्थों का अध्ययन कर सच्चा ज्ञान प्राप्त कर दक्षिणा में जीवन की आहुति समर्पण कर अवधूत बनकर सर्वं वै पूर्णां स्वाहा के सिद्धान्त को हृदयंगम करके लोक-कल्याण के लिये चल दिये।

श्रेष्ठ पुरुषों के ज्ञान प्राप्त करो

अब दयानन्द जहां अज्ञानीजनों को सत्य मार्ग पर चलने एवं आर्ष ग्रान्थों के पठन-पाठन पर बल देते हुए कई शास्त्रार्थ करने पर उद्यत हुये। सत्य-सनातन आर्य-ग्रन्थों के प्रचार में उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। लेकिन इन भाषणों, शास्त्रार्थों से कोई विशेष कार्य नहीं बन पाया। तब उन्होंने भावी पीढ़ी में वैदिक आर्य-ज्ञान बढ़ाने हेतु जिस प्रकार आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य ने सम्पूर्ण भारत की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित कर अवैदिक मतों का निर्मूल किया। इसी प्रकार भगवान् दयानन्द ने भी पुनः वैदिक धर्म की स्थापना के लिये सम्पूर्ण भारत में आर्य समाज की स्थापन कर अवैदिक मतों को निर्मूल करने का कार्य प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम बम्बई महानागर, पश्चात् देश-विदेश के कई स्थानों पर अपने जीवनकाल में ही आर्य समाजें स्थापित कर, आर्य-ज्ञान के प्रचार-प्रसार में आर्यजन भी प्रवृत्त होने लगे और सच्चे शिव

को प्राप्त करते हुये जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होने लगे। इसी विषय को अक्षुण्य बनाये रखने के लिए प्रथम पंचमहायज्ञ-विधि पुन: आर्याभिविनय, संस्कारविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्योद्देश्यरत्नमाला, स्वमंतव्य मंतव्य प्रकाशादि ग्रन्थों की संरचना की। साथ ही साथ भावी संतति को आर्य बनाने हेतु वेदांगप्रकाश १४ भाग व वेदभाष्य भी लिखते रहे।

परिणाम स्वरूप महर्षिकृत ग्रन्थों के पठन-पाठन से आर्य-समाज का प्रचार द्रुत गति से देश-विदेश में फैलने लगा। आर्यजनों की श्रद्धा वेद व आर्य समाज पर अटूट हुई। स्थान-स्थान पर आर्य समाज स्थापित कर महर्षिकृत आर्ष ग्रन्थ पठन-पाठन हेतु बड़े-बड़े विद्यालय एवं गुरुकुल की स्थापदा कर आर्य जन आर्य ज्ञान प्राप्त कर व कराके अपना एवं राष्ट्र का उद्धार करने में प्रवृत्त हुये। इन्हीं की सेवा, त्याग व बलिदानों से स्वराज्य मिला। लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के साथ महर्षिकृत एवं आर्ष-ग्रन्थ का पठन-पाठन निरन्तर क्षयत्ता की ओर जाने लगा। कारण यह हुआ अनेकानेक विद्वान् पण्डितों ने अपनी डफली अपना राग अलापना आरम्भ किया। वैदिक साहित्य एवं विशेष रूप से संध्या व यज्ञ के नाम से अनेकानेक पुस्तकें प्रकाशित होने लगी। देखते ही देखते महर्षिकृत ग्रंथों का स्थान इन अपूर्ण पुस्तकों ने ले लिया और इन अपूर्ण पुस्तकों को ही पढ़-पढ़ाकर प्रचार-प्रसार में पूर्ण सामर्थ्य से प्रवृत्त होने लगे। लेकिन कहा जात है कि—'मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की।

भावी पीढ़ी को आर्य बनाओ !

हमारे प्रचार का विपुल साधन समाज मन्दिर विद्यालय गुरुकुल वैदिक विचारधारा की कई पत्र-पत्रिकायें साथ में

प्रचार के सभी आधुनिक वैज्ञानिक साधन टेप, रेकार्ड, ध्वनि' विस्तारक यन्त्र, उपदेशक, पुरोहित, संन्यासी, वानप्रस्थ मण्डल प्रचर यात्रा में होते हुये भी कतिपय स्थानों को छोड़कर जैसी लग्न, उत्साह, भावना पूर्व के आर्यजनों में थी, वैसी अब नहीं रही। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण साप्ताहिक सत्संगों में देखने को मिलता है। जहां कि पुरोपित वा कुछ वृद्ध पुरुष यज्ञ करते-कराते हुये मिलेंगे और सम्माननीय अधिकारी-वर्ग अन्त में मात्र उपस्थिति भुगताने हेतु आते दिखाई देवेंगे। इसलिए आर्यसमाज के प्रबुद्ध मननशील हितेच्छुवर्ग के लिए अब यह चिन्ता का विषय बन रहा है। जिसका प्रत्यक्ष हमारी पत्र-पत्रिकाओं में बराबर देखने को मिल रहा है।

श्रेष्ठ पुरुषों महर्षि द्वारा ज्ञान को प्राप्त करें। इससे बचने के लिए एक ही उपाय है। महर्षिकृत ग्रन्थों का पठन-पाठन। इन शताब्दी के महापर्व पर हम व्रत लेकर जावें कि हमें कम से कम ५ आर्य विचारों के विद्यार्थी अवश्य हो तैयार करने हैं। यह कार्य तभी सम्भव हो सकेगा, जब हम महर्षिकृत ग्रन्थों का ही पठन-पाठन का संकल्प लेवेंगे। इसके लिए प्रथम ५ से ८ वर्ष के बालकों को आर्य समाज के १० नियम संक्षिप्त व्याख्या सहित, पुनः पढ़ाना है नित्य संध्या यज्ञोपासन विधि महार्षि-कृत ग्रन्थानुसार। इसके लिए महर्षि का दिव्य संदेश यहां है, सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में कि—'माता, पिता आचार्य अर्थ सहित गायत्री संध्योपासना की जो स्नान आच-मन, प्राणायाम की क्रिया है, सिखलावें।" इससे आगे संस्कार विधि का सम्पूर्ण समान्य प्रकरण भूमिका से मंगल कार्य तक पढ़ाना है जो जिससे वर्तमान में जो पुरोहितों की समस्या उप-स्थित है, उसका निराकरण हो सके। जहां महर्षि का यह

सन्देश है कि—"इतना तो अवश्य ही पढ़ लेवें।" सो हमें संस्कार-विधि से ही पढ़ना है। अन्य पण्डितों वा प्रकाशकों की पद्धति से नहीं। क्योंकि संस्कार-विधि ही पूर्ण एतद् विषयक ग्रन्थ है। अन्य इसी पर आधारित ग्रन्थ पूर्ण नहीं है। इतना पढ़ा देने के पश्चात् आर्योद्देश्य रत्नमाला, स्वमन्तव्या मन्तव्य प्रकाश के साथ ही साथ सत्यार्थप्रकाश का प्रथम, द्वितीय तृतीय एवं षष्ठ समुल्लास और पढ़ाना है। वेदांगप्रकाश के सम्पूर्ण १४ भाग न्यून पढ़ावे तो प्रथम तीन भाग वर्णोच्चारण शिक्षा, संस्कृत वाक्य प्रबोध व्यवहारभानु अवश्य पढ़ानी है। जिससे व्यवहारिक पारमार्थिक कर्तव्य कर्म का ज्ञान हो सके।

सत्यार्थप्रकाश षष्ठ समुल्लास पढ़ा देने से विद्यार्थियों की रुचि राजनीति की ओर लग कर धार्मिक बनते हुये समाज एवं राष्ट्र का कल्लाण कर सके एवं शासन किस विधि से करने से वर्तमान में फैल रही अराजकया, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टा-चार, अनैतिकता इत्यादि अवगुणों को दूर कर सकें। इस प्रकार राजनीति की ओर अग्रसर होने वाले छात्रों को इसी समुल्लास के अन्त में दिव्य सन्देश देते हुए महर्षि लिखते हैं कि "वेद मनुस्मृति के सप्तम, अष्टम, नवम अध्याय शुक्र नीति तथा विदुर प्रजागर और महाभारत के शान्ति-पर्व के राजधर्म और आपद्धर्म आदि पुस्तकों में देखकर पूर्ण राजनीतिज्ञ बनकर माण्डलिक वा चक्रवर्ती राज्य करें।

शुभ संकल्प :

इसके लिए महान् "निर्वाण-शताब्दी समारोह पर्व" पर प्रत्येक मनीषी आर्य विद्वान् महानुभावों का यही कर्त्तव्य है कि उपरोक्त पुस्तकों के एतद् विषयक महत्वपूर्ण अंशों की सरल सुबोध टीकायें कर लागत मूल्य पर पुस्तकें विद्यार्थियों के पठन

पाठन के लिए प्रस्तुत करने का विचार लेकर जाये। वैदिक-साम्राज्य स्थापित करने के लिए भगवान् दयानन्द के इस समुल्लास के अन्त में दिये हुए दिव्य संदेश को भी ध्यान में रखना है कि—"वयं प्रजापते प्रजा अभूम (यजु० १८-२९) हम प्रजापति परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा हम उसके किंकर भृत्यवत्त हैं। वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हमको राज्याधिकारी करें और हमारे हाथों से अपने सत्य न्याय की प्रवृति करावें।

अतः आर्यो! हमें नई पीढ़ी को सुयोग्य, धार्मिक, ज्ञानी, आर्यपूर्ण, राजनीतिज्ञ बनाना है। आकर्मण्य बनकर, हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठे रहना है। लेकिन ऐसे महाशय तैयार करना है जो आगे चलकर निष्काम कर्मयोग को जानकर विधानसभा, लोकसभा में जाकर देश में फैली हुई अराजकता, साम्प्रदायिकता, स्वार्थपरायणता को त्यागकर धार्मिक, वैदिक साम्राज्य स्थापित करने में सहयोगी बन सके। इसके लिए हमारे पास साधन तो प्रचुर मात्रा में हैं, केवल आवश्यकता है शुभ-संकल्पवान कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की। ॥ इति ॥

नोट :—हमारे यहां से प्रकाशित महर्षिकृत ग्रन्थों को मान्यता प्रदान कर उन्हीं के शब्दों को संकलित कर नित्य-संध्या, यज्ञोपासन विधि एवं मूलसंस्कार विधिस्थ सम्पूर्ण सामान्य प्रकरण, जिसमें भूमिका से लेकर मंगलकार्य तक प्रस्तुत है। मूल्य : सप्रेम भेंट, डाक व्यय हम वहन करेंगे। जो भी सज्जन पठन-पाठय हेतु मंगाना चाहें मंगा सकते हैं।

विनीत : सोहनलाल शारदा : शाहपुरा,
जिला–भीलवाड़ा (राज.) पिन : ३११४०४

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात।

तूने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम दुखियों के कष्ट हरत है तू।
तेरा महान् तेज है छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की हर हाल में तू हो रहा विद्यमान।
तेरा ही करते ध्यान हम मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।

॥ भगवान् ॥

महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज ने पूजा के व्याख्यानों में इस आदर सूचक शब्द का प्रयोग सभी प्राचीन महर्षियों के लिए किया है।

(१) भगवान् कपिज, (२+३) भगवान् मनु, (४) भगवान् वात्स्पायन, (५) भगवान् कणाद, (६) भगवान् पातञ्जलि आदि— (उपदेशमञ्जरी)

श्रद्धेय आर्य मुनी जी भगवान् शब्द का अर्थ करते हैं जिसमें एश्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष यह ६ गुण हो उसको (भगवान्) कहते हैं। (गीता भाष्य)

इन्द्रदेव पुरोहित आचार्य गुरुकुल शाही पीलीभीत का मत है कि -

जिसमें तेज वीर्य बल, ओज, मन्यू, सहन के गुणविद्यमान हो, भगवान् उसको कहते हैं। उपरोक्त गुण महर्षि में सभी विद्यवन थे ऐसा हम मानते हैं इसलिए। श्रद्धेय स्वामी सत्या नन्द जी महाराज ने मद्दयानन्द प्रकाश में १३६ बार महर्षि के प्रति इस आदर सूचक शव्द उपयोग किया तथा देवेन्द्र बाबू ने भी "जन्मस्थान निर्णय" में ३५ बार इस शब्द का उपयोग किया है। हम भी तदनुसार इसी आदर सूचक शव्द का उपयोग करते हैं। (लेखक)